अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

यौनकर्मी जीवन में देह की भूख बनाम पेट की भूख का सामाजिक यथार्थ :

राज बहादुर पुष्कर
शोधार्थी, हिंदी विभाग
त्रिपुरा विश्वविद्यालय,त्रिपुरा

सलाम आखिरी

शोध सार : 'सलाम आखिरी' उपन्यास के माध्यम से यौनकर्मी जीवन में भूख की आग बनाम देह की भूख की सूक्ष्म दृष्टि इस समस्या को खोजने का प्रयास किया गया है । इस जगत में सभी जीवों की मुख्य समस्या पेट की भूख ही नजर आती है । लेकिन मेरे लेख का मूल आधार मनुष्य जाति की भूख से लिया गया है । इस लेख के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया जा रहा है कि पेट की भूख जब मनुष्य को विचलित करती है तो मनुष्य प्रयास करने लगता है कि पेट की आग को कैसे शांत किया जाए । मनुष्य जाति में पुरुष वर्ग भूख को शांत करने के लिए बाहर निकलकर कहीं भी भूख शांत कर लेता । लेकिन सबसे बड़ी समस्या स्त्रियों के लिए होती है अगर वह बाहर निकलकर पेट की भूख को शांत करने का प्रयास भी करती है तो सबसे पहले लोग यही चाह रखते है कि पहले उसे देह सुख मिल जाए उसके बाद पेट की भूख शांत की जाएगी ।

बीज शब्द : यौनकर्मी, भूख, पेट, समस्या, देह, जीव, प्रकृति ।

प्रस्तावना

हिंदी उपन्यासों में जब यौनकर्मियों की बात होने लगती है तब उन स्थलों की चर्चा जुबान पर आ जाती है जहाँ पर देह भूख का रास्ता साफ नजर आने लगता है । इसे वर्त्तमान समय में देखा जाए तो यौनकर्मी जीवन में भी कई समस्याएँ पैदा हो गई है । जिसका मुख्य कारण है कि इंटरनेट और मोबाईल है । यह सुविधा लोगों के सर पर चढ़कर बोल रही है । क्योंकि यह व्यवस्था बहुत सुरक्षित जान पड़ती है । इसी के सहारे से कालगर्ल, ब्यूटीपार्लर,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

बियर-बार, ढाबों और होटलों आदि सुविधाओं का लाभ लेकर देह की भूख को शांत करने का माध्यम बन गया है । इस व्यवस्था के पनपने के कारण से यौनकर्मी स्थल पर रह रही यौनकर्मियों को देह की भूख के साथ-साथ पेट की भूख भी एक गंभीर समस्या बनकर उपजी है । इन दोनों तथ्यों का अर्थ केवल यही निकाला जा सकता है कि नई व्यवस्था के जन्म लेने के बाद से यौनकर्मी स्थल पर भी आर्थिक समस्या का प्रभाव दिखाई पड़ जाता है । इस सन्दर्भ में औरत की बोली में लिखा है, "दैहिक श्रम सिर्फ विकासशील, गरीब देशों की त्रासदी होती है । विकसित देशों में शौकिया कोई करे तो करे, ये पेशा मजबूरी नहीं होगी । समाजों का फर्क तो होना चाहिए था । बंद और कुंठित समाज की मान्यताएं और विवशताएँ यहाँ तक कि जरूरतें भी अलग किस्म की होती हैं । मगर मेरा भ्रम टूट गया । औरतों और सेक्स के मामले में सोच एक सी दिखाई दी । पेट की भूख और देह की भूख एक सामान जलाती है ।"[1]

हिंदी उपन्यासों में एक उपन्यास 'सलाम आखिरी' है । इस उपन्यास को सूक्ष्म दृष्टि से देखा जाए तो यौनकर्मियों की मूल समस्या देह की भूख बनाम पेट की भूख ही है । इन कारणों को जानने का प्रयास करते है तो कहा जा सकता है कि आधुनिकीकरण ने भौतिक उपकरणों का विकास इस तरह से कर दिया है कि लोगों को घर से बाहर निकलने के लिए मजबूर हो गया है। साथ ही मनुष्य की मानसिकता किस तरह से परिवर्तित हो जाती है कि व्यक्ति सोचने पर मजबूर जाता है कि यह व्यक्ति ऐसा नहीं कर सकता है । प्रकृति ने इस संसार में जीव की उत्पत्ति इस तरह से की है कि कोई भी जीव शांती से जीवन नहीं जी सकता है । क्योंकि जीव की संरचना में पेट की कारीगरी इस तरह से कर दी है कि पेट कुछ समय के लिए भर जाता है और फिर खाली भी हो जाता है । इन जीवों में मनुष्य जाति एक ऐसा जीव है कि जो अपने पेट की भूख को शांत करने के लिए नए-नए रास्ते खोजता रहता । वर्त्तमान में देखा जाए तो पेट की भूख एक ऐसी समस्या बनकर उपजी है कि एक व्यक्ति

[1] श्री, गीता, (२०१४), औरत की बोली, नई दिल्ली, सामायिक प्रकाशन, पृष्ठ. १५

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

दूसरे व्यक्ति का गला काट रहा है। पेट की भूख सीमित होने के बावजूद लोग मानसिक रूप से परेशान रहते है। इस समस्या को खोजने का प्रयास करते है तो पाते है कि बाजारीकरण ने इस तरह से अपना जाल फैला दिया है कि जरुरत न होने पर भी आपकी आवश्यकता अनिवार्य बना दी जाती है। चाहे उच्च वर्ग की भूख की बात की जाए तो सबकुछ होने पर भी धन का भूखा हो जाता है, मध्य वर्ग उस ऊचाई पर पहुचने के लिए भूखा रहता है और निम्न वर्ग पेट की भूख के लिए भूखा रहता है। शेष रह जाती है देह की भूख। सामाजिक रूप से देखा जाए तो इस भूख का रहना भी आवश्यक है क्योंकि मनुष्य जाति के विकास के लिए देह की मिलन से ही मानव जाति की उत्पत्ति संभव है। लेकिन जब इस भूख का सम्बन्ध अनैतिक हो जाता है और उसमें खुद का स्वार्थ छुपा रहता है तब इसे एक व्यापार के रूप में देखा जाने लगता है। उसी का परिणाम है कि सोनागाछी जैसे स्थलों पर जाकर लोग अपने शरीर की भूख को शांत करने का जरिया बना लेते है।

यौनकर्मी शब्द समाज के लिए अनैतिक अर्थ में लिया जा रहा है। जब बीच सभा में लोग इनकी बात करने लगते है तब अपने इज्जत-आबरू नजर आने लगता है और यौनकर्मी जैसे शब्दों पर व्यंग्य करने लगते है और कहने लगते है कि इन लोगों की वजह से समाज पर बुरा असर पड़ रहा है। उपन्यास में सुकीर्ति कह रही है, "एक वेश्या तो फिर भी अपनी देह बेचती है अपने पेट के लिए, भविष्य के लिए, पर उद्द्योगपति, व्यापारी, ब्यरोक्रेट्स मंत्री तो अपना ईमान बेच देते हैं सिर्फ अपनी शान-शौकत और रुतबा बनाए रखने के लिए। अपनी अनदेखी आनेवाली सात पीढ़ियों के लिए। अब तुम्हीं बताओं वेश्या कौन है ? सच कहूँ तो कुछेक अपवादों को छोड़कर मुझे तो यह पूरा देश ही वेश्यालय लगता है और हर आदमी एक ग्राहक। फर्क इतना है कि यह खाँटी रेड लाइट एरिया है और वह ट्यूब लाइट एरिया की खोल में बसा रेड लाइट एरिया।"[2] इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि मनुष्य जाति एक बहुरुपियाँ जाति है जबतक उसके पक्ष में सही राह दिख रही है सबकुछ सही है नहीं तो

[2] कांकरिया, मधु, (२०१६), सलाम आखिरी, नई दिल्ली, राजकमल प्रकशन, पृष्ठ. १७६

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

"धरती की सबसे बुरी औरत' का रूपांतर एक ऐसी औरत के रूप में हो चूका था जो किसी के लिए यूज एंड थ्रो, किसी के लिए उगालदान, किसी के लिए टाइम पास-किसी के लिए चूसा और थूका मार्का 'च्युंगम' तो किसी के लिए गिनी पिग थी ।"[3] इस सबके बाद स्त्री जाति का समाज से बाहर का रास्ता दिखाकर समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता ।

एक समय ऐसा भी रहा है कि इन्हें सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा था । लेकिन जैसे ही टेलीविजन का अविष्कार हुआ वैसे ही धीरे-धीरे रूप बदलने लगा । एक समय था कि लोग आनंद के लिए कोठों पर जाकर मुजरा सुनते थे और उनकी कलाओं का रस लेते थे । इस सन्दर्भ में लिखा है, "तमाम शालीनताओं, मर्यादाओं और संबंधो के मुर्दाघरों के ये रास्ते जहाँ हर आनेवाला इस सत्य से नितांत अनभिज्ञ है कि जीवन की तमाम आधुनिकता के बावजूद सेक्स जीवित तभी रहता है जब भावनाओं से जुड़ा हो वह । वरन् वह सिर्फ मुर्दा जिस्मों के साथ हमबिस्तर भर होना है ।"[4] सामाजिकता की दृष्टि से देखा जाए तो चलचित्र जैसी वस्तु के निर्माण से किस तरह से सभी कलाओं का हनन हुआ है सिर्फ रहा जाती है यौन की भूख । इस भूख का बाजारीकरण के रूप में देखा जाए तो पेट की भूख से ज्यादा सस्ती मिल जाती है देह की भूख । उदारहण के रूप में, "लालबत्ती इलाके की हैसियत, वेश्या के कमरे का स्तर, उम्र, देहयष्टि एवं देह के जलवे के अनुसार शार्ट रेट किसी भी वेश्या की बीस रुपयों से लेकर अस्सी-नब्बे, सौ-सवा सौ तक हो सकती है ।लॉन रेट सौ रुपयों से लेकर पांच सौ या हजार तक भी होती है । समृध्द इलाकों की दोनों ही रेट इन दरों से ऊँची होती है ।"[5] यौनकर्मी जीवन की इस समस्या को क्या कहा जाए जिससे इनकी समस्या का समाधान निकाला जा सके । पेट की भूख की तड़प इस तरह से इन लोगों पर अपना अधिकार जमा ली है कि पेट की भूख मिटाने के लिए कम-से-कम पैसे के लिए अपनी शरीर का भोग करा लेती है और

[3] कांकरिया, मधु, (२०१६), सलाम आखिरी , नई दिल्ली, राजकमल प्रकशन, पृष्ठ.४१
[4]कांकरिया, मधु, (२०१६), सलाम आखिरी, नई दिल्ली, राजकमल प्रकशन, पृष्ठ. १५
[5]कांकरिया, मधु, (२०१६), सलाम आखिरी, नई दिल्ली, राजकमल प्रकशन, पृष्ठ. १५

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

उनका शोषण इस तरह से होने लगता है कि पेट की भूख मिटाने के लिए इन्हें मजबूर किया जाता है कि अपनी देह को निम्न से निम्न स्तर पर आकर अपनी देह समर्पित कर देती है जिससे उनकी पेट की भूख मिट सके । यौनकर्मी व्यापार का आरंभ कब से हुआ यह पता लगाना संभव नहीं है । लेकिन औरत की बोली में लिखा है, "शायद इतिहास को भी नहीं याद होगा कि कि पहली बार कब और कहाँ शुरू हुआ था देह व्यापार ? किसने पहली बार बेची होगी अपनी जिस्म और किसने खरीदी होगी पहली मादा देह ? जब पहली बार हो रहा होगा किसी के जिस्म का सौदा, तो शायद उसने यह कभी नहीं सोचा होगा कि आने वाली सदियों में देह की कोई सरहद नहीं रह जाएगी ।"[6] कुछ अपवादों को दरकिनार कर दिया जाए तो मनुष्य की मानसिकता इस तरह से बदल गई है कि अश्लीलता जैसी भावना एक आम बात हो गई है ।

सलाम आखिरी उपन्यास के द्वारा यह जानने को मिल जाता है कि भूख की आग सबसे बड़ी समस्या है । सलाम आखिरी उपन्यास का मुख्य केंद्र सोनागाछी बनाया गया है लेकिन इसके माध्यम से भूख की आग को गहराई से देखना आवश्यक है । गीताश्री लिखती है, "भूख से उठने वाली पीड़ा इतनी असह्य होती है कि कोई भी व्यक्ति गाँव में जाकर किसी गरीब परिवार की शिनाख्त करके आधे घंटे से भी कम वक्त में कुछ एक हजार रूपए में किसी लड़की को खरीद सकता है । हो सकता है, यह कथन भारत में बहुतों को अतिशयोक्ति लगे, लेकिन हकीकत यह है कि देश के कुछ हिस्सों के गाँवों में ऐसा हो रहा है । बिक रही हैं बेटियां ।"[7] गरीबी क्या हो सकती है पेट की आग सबकुछ बता देती है । एक समय ऐसा भी रहा है जब काम के बदले पेट की भूख से सम्बन्ध रहता था लेकिन आज पेट की भूख के लिए धन आवश्यक हो गया है । उसी के आधार पर समाज में आपका स्तर तय किया जाता । सलाम आखिरी उपन्यास में सुकीर्ति और एक यौनकर्मी से बात हो रही है, "तुम्हें डर नहीं लगता, अपनी इज्जत को इस प्रकार पराए मर्द के हवाले करते...क्यों नहीं लगता है, बहुत

[6] श्री, गीता, (२०१४), औरत की बोली, नई दिल्ली, सामायिक प्रकाशन, पृष्ठ. २१
[7] श्री, गीता, (२०१४), औरत की बोली, नई दिल्ली, सामायिक प्रकाशन, पृष्ठ. ६९

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

लगता है...एकदम शुरू-शुरू में तो बोटी-बोटी अकड़ गई थी...तो फिर क्यों करती हो तुम ऐसा ? क्योंकि इससे भी ज्यादा डर एक और चीज है, उससे लगता है । क्या है वह ? "भूख...!"[8] भूख की आग ही एक ऐसी वस्तु बनकर उपजी है कि लोग न चाहकर भी यौनकर्मी व्यापार में शामिल होना उनकी मजबूरी बन जाती ।

इस पेट की भूख के साथ ही एक बात की और ध्यान जाता है कि स्त्री जाति की ममता कैसी होती है । इसपर यही कहा जा सकता है स्त्री कैसी भी हो लेकिन उसकी ममता कभी ख़त्म नहीं होती है वह चाहे यौनकर्मी जीवन से सम्बन्ध रखती हो या परिवार से सम्बन्ध रखती हो । सुकीर्ति से यौनकर्मी कह रही है, "मैं हर महीने अपने गाँव, अपने माँ-बाप को छोटे भाई-बहनों के लिए हजार रुपये के आसपास भेजती हूँ । यह कहकर कि मैं किसी कारखाने में काम करती हूँ और अठारह सौ रुपये महीने कमाती हूँ । यदि मालूम पड़ जाए उन्हें कि मैं कैसे कारखाने में हूँ तो मेरा मुँह तक न देखें वे...पैसे लेना तो दूर... ।"[9] मनुष्य जाति में स्त्री जाति एक ऐसी जाति है कि प्रकृति ने इनके साथ अन्याय किया सा जान पड़ता है । क्योंकि आज भी स्त्रियों के साथ पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक और धार्मिक आदि के माध्यम से आज भी उनका शोषण हो रहा है । लेकिन उनकी ममता इन शोषण के बाद भी जिन्दा रहती है ।

यौनकर्मी जीवन की दासता वहाँ पहुँच गई है जहाँ से वापस आन असंभव है । क्योंकि पेट की भूख के साथ ही इस भूख को जिन्दा रखने के लिए देह को बचाना भी आवश्यक है । लेकिन अंतिम रूप वहाँ पहुँच जाती है, "कभी सड़ा हुआ केला देखा है आपने । ठीक वैसा ही है हम लोगों का शरीर । बस...सड़ांध-अभी एकदम ऊपर तक नहीं आई है । मुझे तो लगता है कि ईश्वर है ही नहीं, यदि ईश्वर होता तो क्या मैं चौंतीस वर्ष में ही ऐसी हो जाती और यह लड़की मात्र पंद्रह वर्ष में ही पागल और एड्स पीड़ित हो जाती ? बताइए आप कहती हैं कि मैं प्रतिशोध की बात न करूँ, पर क्या है मेरी मुक्ति संभव ? मुझे तो लगता है कि यदि मैंने

[8] कांकरिया, मधु, (२०१६), सलाम आखिरी, नई दिल्ली, राजकमल प्रकशन, पृष्ठ. १९
[9] कांकरिया, मधु, (२०१६), सलाम आखिरी, नई दिल्ली, राजकमल प्रकशन, पृष्ठ. २७

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 3, (July-September 2022)

बदला नहीं लिया तो शायद अगले जन्म तक इस नाम की दुर्गन्ध मेरा पीछा न छोड़े ?"[10] इन यौनकर्मियों का अंतिम अवस्था इस रूप में हो जाती है कि अपनी देह द्वारा लोग को संतुष्ट करके ऐसे रोग का शिकार हो जाती है कि अल्प समय में ही संसार से विदाई मिल जाती है।

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि पेट की भूख एक ऐसी समस्या है जिसका सम्बन्ध आरंभिक समय से बना रहा है। व्यक्ति जब जीवन जीने का मार्ग खोजता है तब सबसे पहली प्राथमिकता पेट की भूख को देता है। क्योंकि इस समस्या को जड़ से खत्म नहीं किया जा सकता है। यह भी नहीं संभव है कि फ्रिज की तरह पेट में कई दिनों के लिए स्टोर किया जा सके। यही कारण है कि सोनागाछी जैसे स्थलों पर देह की भूख के द्वारा ही लोग अपनी भूख शांत करते है और इनकी शांती से ही इन यौनकर्मियों की पेट की भूख शांत होती है। लेकिन सामाजिक रूप से देखा जाए तो पेट की भूख शांत करने के लिए यह मार्ग सही नहीं है। फिर भी पेट की भूख लोगों से कुछ भी करा सकती है।

[10] कांकरिया, मधु, (२०१६), सलाम आखिरी, नई दिल्ली, राजकमल प्रकशन, पृष्ठ. १८९